

पाठ - 12  
कविता - जीवन सत्य

उच्चारण / श्रुतलेखन :

1. कवहुँक
2. गँवाई
3. कहाणी
4. काढ़ै
5. फिरै
6. मनुवां
7. सुभिरन

शब्दार्थ :

Pg. no. 119.

लिखिए :-

1) निंदा क्यों नहीं करनी चाहिए ?

उत्तर : निंदा करना एक बुरी आदत है। हमें कभी किसी भी व्यक्ति की निंदा नहीं करनी चाहिए। हर व्यक्ति हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है। जीवन में किसी भी मोड़ पर हमें उस व्यक्ति की सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ-न-कुछ कमी होती है। हमें दूसरों की अच्छाईयों पर ध्यान देना चाहिए न कि उनकी बुराईयों पर। इसीलिए हमें दूसरों की निंदा करने से बचना चाहिए।

अ. व्यक्ति को गर्व क्यों नहीं करना चाहिए ?

उत्तर: अहंकार मानव का अवगुण है। हमें जीवन में अहंकार नहीं करना चाहिए। इस जगत में कुछ भी स्थायी नहीं है जो आज हमारा है वह कल किसी अन्य का होगा। यह जीवन क्षणभंगुर है। न जाने कब काल हमारे बाल पकड़कर हमें ले जाए। किसी भी क्षण हम मृत्यु को प्राप्त हो सकते हैं। अतः व्यक्ति को कभी गर्व नहीं करना चाहिए।

ग. 'सिर दे' से कबीर का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर: 'सिर' का अर्थ है अहंकार। जब किसी भी व्यक्ति में अहंकार होता है तो वह किसी से प्रेम नहीं पा सकता। लोगों से प्रेम, मान-सम्मान पाने के लिए हमें अपने अहंकार का त्याग करना पड़ेगा। कितना भी बड़ा व्यक्ति हो बिना 'सिर दिए' अर्थात् बिना अपने अहंकार का त्याग किए प्रेम तथा सम्मान नहीं प्राप्त कर सकता।

घ. गुरु के गुणों के बारे में क्या बताया गया है ?

उत्तर- गुरु की महिमा अपरंपार है। उनकी महिमा का बखान करते-करते शब्दों की कमी पड़ जाती है। कबीरदास जी के अनुसार गुरु के गुणों का वर्णन लिखने के लिए यदि पूरी धरती को कागज़, सभी वनों की कलम तथा सातों समुद्रों के जल को स्याही बना लिया जाए तो भी गुरु-महिमा पूरी नहीं लिखी जा सकती।

ड. किस प्रकार का सुमिरन व्यर्थ है ?

उत्तर: दिखावटी सुमिरन व्यर्थ है। यदि दिखावे के लिए माला हाथ में लेकर फेरने और मुख से जीभ फिराकर भजन कीर्तन करने से प्रभु की भक्ति नहीं होती। यदि मन ईश्वर में लीन न होकर इधर-उधर भटकता रहे तो ऐसा सुमिरन व्यर्थ है। ईश्वर का सुमिरन करने के

लिये मन को मिथ्या आडंबरों से हटाकर ईश्वर में लीन करना चाहिए।

विस्तार से

क. कबीर ने गुरु को 'कुम्हार' क्यों कहा है?

उत्तर:- कबीर जी के अनुसार गुरु कुम्हार के समान तथा शिष्य एक घड़े के समान है। कुम्हार अपनी कल्पना शक्ति से नए-नए बर्तनों का निर्माण करता है। उन्हें सजाता - सँवारता है। उन्हें रंग देता है। उन्हें उचित आकार देता है। कुम्हार बाहर से चोट करते हुए अंदर से हाथ का सहारा देकर घड़ा बनाता है ठीक उसी प्रकार एक गुरु अनुशासन तथा प्रेम पूर्वक अपने शिष्य को प्रशिक्षित करता है। वह अपने शिष्य के अवगुणों का दूर कर उसके व्यक्तित्व का निर्माण करता है। एक सच्चा गुरु अपने शिष्य को संस्कार, अनुशासन तथा परंपराओं के जल से सींचता है। इसीलिए गुरु को कुम्हार कहा गया है।

ख. कबीर ने हीरा किसे कहा है? यह कौड़ी कैसे हो रहा है?

उत्तर:- कबीर ने मानव जीवन को हीरा कहा है। मानव संसार की मोह-माया में फँसकर यह कौड़ी के मोल हो गया है। इस संसार में मानव का जन्म सद्कर्मों के लिए हुआ है। उसे अपने सद्कर्मों से ईश्वर की प्राप्ति करना है। अज्ञानतावश मनुष्य संसार के मायाजाल में फँस गया है। लोभ-मोह के बंधनों में बँधकर मानव ने अपना जीवन व्यर्थ कर लिया है। अर्थात् उसके जीवन का मोल कौड़ी के समान हो गया है। मानव को अपने जीवन का महत्त्व समझना चाहिए।

ग. प्रेम को 'गूँगे केरी सरकरा' क्यों कहा गया है?

उत्तर:- प्रेम एक भाव है। इसे सिर्फ मस्सूस किया जा सकता है इसका शब्दों में वर्णन करना एक कठिन कार्य है। प्रेम से उत्पन्न

आनंद का वर्णन करते हुए शब्द कम पड़ जाते हैं। एक गूँगा व्यक्ति गुड़ खाकर उसका आनंद ले सकता है। वह प्रसन्न तथा आनंदित हो सकता है। किंतु किंतु वह गुड़ की मिठास का आनंद नहीं बता सकता। उसी प्रकार एक प्रेमी भी प्रेम महसूस तो कर सकता है लेकिन उस प्रेम से प्राप्त आनंद का वर्णन नहीं कर सकता।

घ. 'सुमिरन' क्या है? सच्चा 'सुमिरन' कैसे होगा?

उत्तर- संपूर्ण समर्पण के साथ ईश्वर का ध्यान करना ही सुमिरन है। सच्चा सुमिरन वही है जिसमें सुमिरन के समय भक्त के मन में ईश्वर के अतिरिक्त और किसी का विचार नहीं आना चाहिए। मनुष्य का मन स्थिर होने पर ही वह सच्चा सुमिरन करने में सफल हो सकता है। सच्चे सुमिरन में भक्त तथा भगवान के बीच कोई नहीं आ सकता। हमें ईश्वर को सुख तथा दुःख दोनों में समान रूप से ईश्वर का सुमिरन करना चाहिए। यही सच्चा सुमिरन है।